दक्षिण एशिया में संघर्ष, आतंकवाद और भारत की सक्रिय रणनीति ”ऑपरेशन सिंदूर“ के संदर्भ में

प्रभा भारतीय
शोध छात्रा रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभागए इलाहबाद डिग्री कॉलेज, (इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज), उ0प्र0, भारत

सार **—7 मई 2025 को किया गया ‘ऑपरेशन सिन्दूर” दक्षिण एशिया की बदलती सुरक्षा संरचना में एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में उभरा। यह केवल पाकिस्तान आधारित आतंकवाद के खिलाफ भारत की सैन्य प्रतिक्रिया नहीं थी, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया में सुरक्षा, स्थिरता और सैन्य शक्ति संतुलन को प्रभावित करने वाला कदम था। इस अध्ययन में, दक्षिण एशिया में क्षेत्र अस्थिरता और ऑपरेशन के रणनीतिक निष्पादन, क्षेत्रीय प्रभावों और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया का विश्लेषण किया गया है।**

दक्षिण एशिया के संदर्भ में, ऑपरेशन सिन्दूर ने क्षेत्रीय सुरक्षा प्रतिमानों को नया रूप दिया। इसनें यह स्पष्ट किया कि आतंकवाद के खिलाप कठोर लेकिन नियंत्रित प्रतिक्रिया संभव है, जिससे क्षेत्र में युद्ध जैसी स्थिति से बचा जा सके। साथ ही, इस ऑपरेशन ने भारत की भूमिका को एक श्जिम्मेदार शक्तिश के रूप में मजबूत किया, जो न केवल अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करता है बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान देता है।

मुख्य शब्द—: **दक्षिण एशिया, आतंकवाद–निरोध, ऑपरेशन सिन्दूर, वैश्विक प्रभाव, आत्मनिर्भर भारत, स्वदेशी रक्षा तकनीकी।**

I. परिचय

दक्षिण एशिया एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ विश्व की सबसे ज्यादा आबादी रहती है, जो रणनीतिक रूप से भी काफी महत्वपूर्ण है। साथ ही यह क्षेत्र कई तरह की समस्याओं से भी जुझ रहा है। यहाँ के लगभग सभी देश किसी न किसी प्रकार के संघर्ष या आतंकी गतिविधियों से प्रभावित हैं। यह क्षेत्र 1947 से पहले काफी हद तक एक जैसा और आपस में जुड़ा हुआ था। लेकिन स्वतंत्रता के बाद अलग–अलग देशों का निमार्ण हुआ और हर देश ने अपनी अलग पहचान और नीतियाँ अपनाई। नेपाल और भूटान को छोडकर बाकी देश पहले अंग्रेजों के उपनिवेश रहे थे।

हालाँकि इस क्षेत्र में सांस्कृतिक विविधता बहुत ज्यादा है फिर भी यहाँ एक तरह की एकता देखने को मिलती है जो की सभ्यताओं के विकास द्वारा एक दूसरे से जुड़े है जो कई मामले में एक दूसरे के पूरक हैं।

लेकिन आजादी के बाद यहाँ एक नई समस्या सामने उत्पन्न हुई, वह थी राष्ट्रवाद। हर देश में अलग–अलग प्रकार का राष्ट्रवाद उत्पन्न हुआ, जो कई बार आक्रामक रूप ले लेता था। यह राष्ट्रवाद कभी पश्चिमी देशों के प्रति या पड़ोसी देशों या अपने ही देश में कुछ समूहों के प्रति था। जिसके कारण दक्षिण एशिया में आपसी संघर्ष एवं टकराव बढ़े। इन्ही कारणों से इस क्षेत्र को हमेशा संघर्ष प्रधान क्षेत्र कहा जाता है।

क्षेत्र की एक और बड़ी समस्या है कि आपस में सहयोग नहीं करते हैं और अविश्वास ज्यादा रखते हैं। जिसके कारण इनकी विकास की गति भी प्रभावित होती है। अगर ये देश साथ मिलकर काम करें तो आर्थिक और सामाजिक विकास में वृद्धि देखी जा सकती है। इनके बीच जब तक आपसी संघर्ष और अविश्वास कम नहीं होगा, तब तक इन क्षे़त्रों में समग्र विकास संभव नहीं है। इसलिए दक्षिण एशिया के सभी देश शांति, सहयोग और आपसी समझ को बढ़ावा दें।

दक्षिण एशिया के बारे में एक कड़वा सच यह है यहाँ कोई भी देश पूरी तहर स्थिर और विकसित नहीं हो पाया है, क्योंकि इसका मुख्य कारण यह भी है कि यहाँ राजनीतिक अस्थिरता और आपसी संघर्ष लगातार होते रहते है। यह क्षेत्र आजादी के बाद से ही सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं से घिरा हुआ है, जिसका असर आज भी दिखाई देता है।

भौगोलिक और आर्थिक रूप से इस क्षेत्र में सहयोग की काफी संभावनाएँ हैं, लेकिन इसके बाबजूद इन देशों के बीच विश्वास की कमी है। साथ ही एक दूसरे पर भरोसा न होने के कारण सहयोग कम होता है, इन क्षेत्रों में राजनीतिक व्यवस्था और जनभागीदारी की कमी भी देखने को मिलती है, जिसके कारण यहाँ की नीति सही से लागू नहीं हो पाती और संघर्ष होता रहता है।

वर्तमान में दक्षिण एशिया अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन चुका है। इसमें भारत की भूमिका सबसे अहम है, क्योकि यह इस क्षेत्र का सबसे बड़ा देश है और लगभग सभी पड़ोसी देशों की सीमाएँ भारत से जुड़ी हुई हैं। यही कारण है कि इस क्षेत्र में होने वाले अधिकांश सीमा विवाद भारत से जुड़े हुए हैं।

दक्षिण एशिया में सीमा विवाद एक बड़ी समस्या है। भारत और चीन के बीच सीमा विवाद, भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर मुद्दा, भारत और बांग्लादेश के बीच नदी और सीमा विवाद तथा श्रीलंका के साथ समुद्री मुद्दे जैसे कई उदाहरण हैं। ये विवाद छोटे–बड़े स्तर पर लगातार चलते रहते हैं और क्षेत्र की शांति को प्रभावित करते हैं। साथ ही आतंकवाद भी इस क्षेत्र की प्रमुख सुरक्षा चुनौती है। कश्मीर विवाद के साथ आतंकवाद का जुड़ना, भारत और श्रीलंका के बीच तमिल मुद्दा और बांग्लादेश से जुड़ी घुसपैठ की समस्याएँ, इस क्षेत्र की सुरक्षा को और जटिल बना देती हैं। साथ ही अफगानिस्तान और पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्रों मे आतंकवाद का केन्द्र बन जाना पूरे दक्षिण एशिया के लिए चिंता का विषय है। इन क्षेत्रों में बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप रहा है, जिससे यहाँ संघर्ष और बढ़े हैं। जैसे शीत युद्ध के समय अफगानिस्तान में सोवियत संघ की उपस्थिति के जवाब में पाकिस्तान को अमेरिका द्वारा सैन्य सहायता दी गई, जिससे इन क्षेत्र में हथियारों का दौड़ और अस्थिरता बढ़ी।[1]

दक्षिण एशिया विश्व के सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट क्षेत्रों में से एक है, जिसमें अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका जैसे देश शामिल हैं। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही अनेक महान सभ्यताओं का उद्गम स्थल रहा है, जिसने विश्व के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

वर्तमान समय में दक्षिण एशिया विश्व की कुल जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अपने भीतर समेटे हुए है। यहाँ लगभग 1.89 अरब लोग निवास करते हैं, जो वैश्विक जनसंख्या के पाँचवें भाग से भी अधिक

है। इतनी विशाल जनसंख्या इस क्षेत्र को न केवल जनसांख्यिकी दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है, बल्कि इसके विकास और संसाधन प्रबंधन को भी चुनौतीपूर्ण बना देती है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र लगभग 42.9 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, जो आकार में महाद्वपीय संयुक्त राज्य अमेरिका के लगभग बराबर है। जनसंख्या की द्वष्टि से यह क्षेत्र अत्यंत सघन है, क्योंकि यहाँ की आबादी अमेरिका की तुलना में लगभग चार गुना अधिक है। इसी कारण दक्षिण एशिया विश्व के सर्वाधिक घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक माना जाता है।[2]

II. भारत–दक्षिण एशियाई देशः आपसी सहयोग एवं प्रतिस्पर्धा

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के सभी सदस्य देशों के नेताओं को आमंत्रित किया। यह कदम भारत की 'पड़ोसी देशों' के प्रति प्राथमिकता और उसके क्षेत्रीय दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इससे यह संदेश गया कि भारत अपने पड़ोसियों के साथ सहयोगात्मक और सकारात्मक संबंध स्थापित करना चाहता है।

दरअसल, दक्षिण एशियाई देशों के प्रति भारत की नीति का मुख्य आधार ''पड़ोसी पहले'' दृष्टिकोण है। इस नीति के अंतर्गत क्षेत्रीय संपर्क को मजबूत करने, सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्बन्धों को बढ़ावा देने तथा विकासात्मक और मानवीय सहायता प्रदान करने पर विशेष जोर दिया गया है। भारत के दृष्टिकोण से क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से ही स्थायी शांति और समृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि किसी भी देश की विदेश नीति उसके आसपास के क्षेत्र में शांति और स्थिरता पर निर्भर करती है। घरेलू, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर स्थिरता बनाए रखना किसी भी राष्ट्र के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। इसी कारण भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ संतुलित और सहयोगपूर्ण संबंध बनाए रखने का प्रयास कर रहा है। किसी भी सरकार के लिए अपने राष्ट्रीय हितों को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाना तथा वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक होता है। इसके लिए सबसे पहले अपने पड़ोसी क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखना अनिवार्य है। यदि आसपास का क्षेत्र अस्थिर रहता है, तो इसका सीधा प्रभाव देश की सुरक्षा और विदेश नीति पर पड़ता है।

प्रख्यात विदेश नीति विश्लेषक सी. राजा मोहन ने भी स्पष्ट किया है कि ''अपने पड़ोस में प्रभाव बनाए बिना कोई भी राष्ट्र वैश्विक मंच पर एक विश्वसनीय शक्ति नहीं बन सकता।'' इसी सोच को ध्यान में रखते हुऐ, भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों को सुदृढ़ करने पर विशेष बल दिया है।

हालाँकि, दक्षिण एशिया लंबे समय से अस्थिरता का सामना करता रहा है। इस क्षेत्र में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर निरंतर उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है, जिससे शांति और स्थिरता प्रभावित होती है। वर्तमान में भी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, म्यांमार और श्रीलंका जैसे देशों की स्थिति नाजुक बनी हुई है जो पूरे क्षेत्र के लिए चिंता का विषय है। ऐसी परिस्थितियों में क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने और संकट प्रबंधन में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। विशेष रूप से चीन की बढ़ती आर्थिक और सामरिक उपस्थिति के संदर्भ में भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों को आर्थिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।[3]

III. दक्षेस

दक्षिण एशिया में देशों के बीच पारस्परिक संबंध अधिकतर द्विपक्षीय आधार पर विकसित हुए हैं न कि बहुपक्षीय ढांचे के माध्यम से, यही कारण है कि इस क्षेत्र में अपेक्षित स्तर का क्षेत्रीय सहयोग और विकास देखने को नहीं मिला। यद्यपि दो दशक पहले 'दक्षेस' इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभर सकता था लेकिन सदस्य देशों के बीच आपसी विश्वास और तालमेल की कमी के कारण यह संगठन अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुँच पाया।

वर्ष 1985 में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन की स्थापना आर्थिक विकास और क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। इसके संस्थापक सदस्य देशों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान और मालदीव शामिल थे जबकि वर्ष 2007 में अफगानिस्तान भी इसका आठवाँ सदस्य बना। इसके बावजूद, दक्षेस कई बार आर्थिक सहयोग मंच के बजाय राजनीतिक विवादों को उठाने का माध्यम बन गया, विशेषकर भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों के संदर्भ में।[4]

दक्षेस की स्थापना के बाद प्रारंभिक वर्षों में शिखर सम्मेलनों का आयोजन नियमित रूप से किया जाता रहा। 1985 से 1989 तक तथा 1990 के दशक में भी अधिकांशतः वार्षिक रूप से बैठकें आयोजित होती रही, जिनमें सदस्य देशों के प्रमुखों द्वारा विभिन्न मुद्दो पर सहमित और प्रतिबद्धताएँ व्यक्त की गई। लेकिन इसके बाद शिखर सम्मेलनों के आयोजन में अनियमितता आने लगी।

पिछले दो दशकों में केवल कुछ ही शिखर सम्मेलन आयोजित हो सके हैं, जैसे 2002, 2004, 2005, 2007, 2008, 2010, 2011, और 2014। इससे स्पष्ट होता है कि संगठन की सक्रियता में निरंतर कमी आई है।

दक्षेस का 19वाँ शिखर सम्मेलन वर्ष 2016 में पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में आयोजित होने वाला था। लेकिन 18 सितंबर 2016 को उरी में भारतीय सेना पर आतंकवादी हमले के बाद भारत ने इस सम्मेलन में भाग लेने से इनकार कर दिया। इसके बाद बांग्लादेश, भूटान और अफगानिस्तान ने भी सम्मेलन में शामिल होने से मना कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप यह सम्मेलन रद्द कर दिया गया।

यह घटना इस बात को दर्शाती है कि दक्षिण एशिया में राजनीतिक तनाव और सुरक्षा संबंधी मुद्दे, क्षेत्रीय सहयोग को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। जब तक सदस्य देशों के बीच आपसी विश्वास और स्थिरता नहीं होगी, तब तक संगठन अपनी पूर्ण क्षमता के साथ कार्य नहीं कर पाएंगे।[5]

IV. दक्षिण एशिया में आतंकवाद

दक्षिण एशिया में आतंकवाद एक गंभीर और जटिल समस्या के रूप में उभरा है जिसने क्षेत्रीय शांति, स्थिरता और विकास को गहराई से प्रभावित किया है। इस क्षेत्र में आतंकवाद की घटनाएँ विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान में अधिक देखने को मिलती हैं, लेकिन इनका प्रभाव अफगानिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल जैसे देशों पर भी व्यापक रूप से पड़ता है।

सितंबर 2001 में संयुक्त राज्य अमेरिका पर हुए आतंकवादी हमलों के बाद वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के विरूद्ध एक व्यापक अभियान शुरू किया गया। इसी क्रम में अमेरिका के नेतृत्व में दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम एशिया में सैन्य कार्यवाहियां प्रारम्भ हुई, जिसे अफगानिस्तान में चलाया गया ''ऑपरेशन एंड्योरिंग फ्रीडम'' प्रमुख था। इस अभियान को पाकिस्तान की महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त हुई और प्रारंभिक स्तर पर इसे उल्लेखनीय सफलता भी मिली। इसके बाबजूद, आतंकवादी संगठनों जैस अल–कायदा और सहयोगी तालिबान पूरी तरह समाप्त नहीं हो सके। उन्होंने पाकिस्तान के शहरी क्षेत्रों तथा पाकिस्तान–अफगानिस्तान सीमा के दुर्गम इलाकों में शरण लेकर पुर्नगठन किया। इन क्षेत्रों मे रहने वाले पश्तून समुदाय के कुछ

वर्गों ने भी इन संगठनों के प्रति सहानभूति दिखाई, जिससे आतंकवाद की समस्या और जटिल हो गई।

अल–कायदा ने पाकिस्तान के स्थानीय आतंकवादी समूहों के साथ गठजोड़ कर अपनी गतिविधियों का विस्तार किया। ये समूह पाकिस्तान में पश्चिमी–विरोधी हमलों और भारत के जम्मू–कश्मीर क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों में शामिल रहे हैं। साथ ही, इन संगठनों ने पाकिस्तान की तत्कालीन सरकार के विरूद्ध भी कार्यवाई की, जिसके अन्तर्गत 2003 में राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ पर हत्या के प्रयास भी किए गए।

वास्तव में, पाकिस्तान के लिए उग्र इस्लामी आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष एक अस्तित्व की चुनौती बन गया है। इसके साथ ही, सीमा पार घुसपैठ की समस्या भी क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है, जिसमें पाकिस्तान नियंत्रित क्षेत्रों से उग्रवादी कश्मीर की नियंत्रण रेखा पार कर भारत में प्रवेश करते है।[6]

V. भारत में हुऐ प्रमुख आतंकी हमले[7]

क्र. सं.	घटना	तारीख	स्थान	आतंकी संगठन	भारत को नुकसान	भारत की प्रतिक्रिया (तिथि व ऑपरेशन)
1	संसद हमला	13 दिसंबर 2001	नई दिल्ली (संसद भवन)	जैश–ए–मोहम्मद, लश्कर–ए–तैयबा	9 सुरक्षाकर्मी, 1 माली शहीद	ऑपरेशन पराक्रम (2001–02): सीमा पर बड़े पैमाने पर सैना की तैनाती
2	मुंबई हमला	26 नवंबर 2008	मुंबई	लश्कर ए–तैयबा (Let)	170 मृत, 300 घायल	ऑपरेशन ब्लैक टॉरनेडो (26–29 नवंबर 2008): NSG द्वारा आतंकियो का सफाया
3	उरी हमला	18 सितंबर 2016	उरी (J&K)	जैश ए–मोहम्मद (Jem)	19 सैनिक शहीद	सर्जिकल स्ट्राइक (28 सितंबर 2016): LOC पार आतंकी ठिकानो पर हमला
4	पुलवामा हमला	14 फरवरी 2019	पुलवामा (J&K)	जैश ए–मोहम्मद (Jem)	40 CRPF जवान शहीद	बालाकोट एयर स्ट्राइक ऑपरेशन बंदर (26 फरवरी 2019): आतंकी शिविरों पर हवाई हमला
5	पहलगाम हमला	22 अप्रैल 2025	पहलगाम (J&K)	TRF (LeT से जुड़ा)	26 नागरिक मृत	ऑपरेशन सिंदूर (7 मई 2025): आतंकियों के खिलाफ व्यापक सुरक्षा अभियान

VI. भारत का बदलता आतंकवाद–रोधी दृष्टिकोण

पिछले एक दशक में आतंकवाद के प्रति भारत के दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला है। स्वतंत्रता के बाद, लंबे समय तक भारत की आंतकवाद–रोधी नीति अपेक्षाकृत संयमित और रक्षात्मक रही। इस दौरान भारत ने मुख्य रूप से कूटनीतिक प्रयासों, आंतरिक सुरक्षा उपयों तथा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर दबाब बनाने के माध्यम से आतंकवाद का सामना किया। सीमा पार जाकर प्रत्यक्ष सैन्य कार्यवाई करने से भारत प्रायः बचता रहा, जिससे उसकी नीति को कई बार ''संयमित'' या ''नरम'' भी कहा गया।

हालाँकि, बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य के साथ भारत की रणनीति में भी बदलाव आया है। विशेषकर हाल के वर्षों में यह स्पष्ट हुआ है कि भारत अब केवल प्रतिक्रियात्मक नहीं, बल्कि सक्रिय नीति अपना रहा है। सर्जिकल स्ट्राइक (2016) और बालाकोट एयर स्ट्राइक (2019) ने इस परिवर्तन की शुरूआत को स्पष्ट किया, जबकि 2025 में ''ऑपरेशन सिंदूर'' ने इस नीति को और अधिक मजबूत रूप से स्थापित किया।

22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में भीषण आंतकी हमले के बाद भारत ने त्वरित और निर्णायक प्रतिक्रिया देते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया। यह केवल एक सैन्य कार्यवाई नहीं थी, बल्कि भारत की नई रणनीतिक सोच का प्रतीक थी। जिसका उद्देश्य आतंकवाद को अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही उसकी जड़ों पर प्रहार करना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अब एक अधिक दृढ़ और आक्रामक आतंकवाद–रोधी सिद्धान्त विकसित कर रहा है। इस सिद्धान्त का मूल आधार यह है कि आतंकवादी ढांचे को केवल बचाव के माध्यम से नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर प्रत्यक्ष कार्यवाई द्वारा नष्ट किया जाए। इस प्रकार, भारत की नीति अब ''रक्षात्मक प्रतिक्रिया'' से आगे बढ़कर ''सक्रिय प्रतिरोध और निवारक कार्यवाई'' की दिशा में विकसित हो चुकी है।

अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में भारत का आतंकवाद के प्रति दृष्टिकोण अधिक सशक्त, निर्णायक और रणनीतिक रूप से परिपक्व हो गया है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

VII. ऑपरेशन सिंदूर

22 अप्रैल 2025 पहलगाम में हुई आतंकवादी घटना में 26 लोग मारे गये कालांतर में यह घटना 7 मई, 2025 में संचालित ऑपरेशन सिंदूर की वैचारिक और प्रतीत्कात्मक पृष्ठभूमि के रूप में उभरी, जिसे पाकिस्तान स्थित आतंकवादी शिविरों के विरूद्ध भारत की सैन्य कार्यवाई का कोड नाम दिया गया। इस अभियान के अन्तर्गत भारत ने पहली बार पाकिस्तान स्थित जैश–ए–मोहम्मद और लश्कर–ए–तैयबा जैसे संगठनों के प्रमुख ठिकानों को प्रत्यक्ष रूप से

लक्ष्य बनाया। ये दोनों संगठन पूर्व में भारत के भीतर हुए अनेक आतंकवादी हमलों के लिए उत्तरदायी माने जाते।

खुफिया एजेंसियों द्वारा पाकिस्तान के सक्रिय आतंकवादी ढाँचों से संबंधित कुल 21 ठिकानों की पहचान की गई थी, जिनमें 9 ठिकानों को इस सैन्य अभियान के लिए चुना गया। यह चयन रणनीतिक प्राथमिकताओं, खतरे के स्तर और संचालनात्मक व्यवहार्यता के आधार पर किया गया। उल्लेखनीय है कि यह पहला अवसर था जब एक ही अभियान के अंतर्गत एक साथ अनेक आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया गया।[8]

VIII. ऑपरेशन के मुख्य उद्देश्य

इस ऑपरेशन का उद्देश्य भारत की समग्र सैन्य क्षमता, समन्वय और रणनीतिक दक्षता को मजबूत करना था। सबसे प्रमुख लक्ष्य थल सेना, नौसेना और वायु सेना की तालमेल को बढ़ाना था, ताकि तीनों सेनाएँ एकीकृत रूप से प्रभावी ढंग से कार्य कर सकें। इसके साथ ही उन्नत हथियार प्रणालियों और संचार नेटवर्क के तकनीकी एकीकरण एवं उनकी अंतरसंचालनीयता का परीक्षण किया गया, जिससे आधुनिक युद्ध परिस्थितियों में उनकी उपयोगिता सुनिश्चित हो सके।

एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में सैन्य बलो की तैनाती की क्षमता का मूल्यांकन करना था, ताकि आपात स्थितियों में त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया दी जा सके। इसके अतिरिक्त बड़े पैमाने के सैन्य अभियानों को समर्थन देने के लिए भारत के “लॉजिस्टिक नेटवर्क” की मजबूती और दक्षता का भी परीक्षण किया गया।

अंततः इस ऑपरेशन के माध्यम से हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, समुद्री क्षेत्र जागरूकता और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया गया। इस प्रकार यह ऑपरेशन भारत की रक्षा तैयारियों और रणनीतिक क्षमता का व्यापक प्रदर्शन था।[9]

पहलगाम हमले के तुरंत बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कड़ा रूख अपनाते हुए कहा कि “जो लोग हमारे निर्दोष नागरिकों की हत्या करेंगे, उन्हे इसकी भारी कीमत चुकानी होगी”। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भारत आतंकवाद के खिलाफ किसी भी स्तर पर कार्यवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय रक्षा मंत्रालय ने अपने आधिकारिक बयान में कहा कि यह कार्यवाई 22 अप्रैल के हमले के दोषियों को “जावाबदेह ठहराने” और आतंकवादी ढांचे को समाप्त करने की दिशा में एक आवश्यक कदम है।[10]

IX. भारत की निर्णायक प्रतिक्रिया एवं क्रियान्वयन

22 अप्रैल 2025 को जम्मू–कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों के एक सशस्त्र समूह ने पर्यटकों कों निशाना बनाते हुए क्रूर हमला किया, जिसमें 26 नागरिकों की मृत्यु हुई। यह हमला न केवल मानवता पर आघात था, बल्कि भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती भी था।

इन घटनाक्रमों के बीच, लगभग दो सप्ताह के भीतर भारत सरकार ने सेना, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, विदेश मंत्रालय और रिसर्च एण्ड एनालिसिस विंग के समन्वय से ऑपरेशन सिंदूर प्रारंभ किया। यह एक बहुआयामी सीमापार अभियान था जिसका उद्देश्य आतंकी ढांचे को ध्वस्त करना, उनके नेटवर्क को कमजोर करना और आतंकवाद के खिलाफ एक सशक्त संदेश देना था।

“ऑपरेशन सिंदूर” नाम भी प्रतीकात्मक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण था। ‘सिंदूर’ भारतीय संस्कृति में वैवाहिक जीवन और सम्मान का प्रतीक माना जाता है। इस नाम के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि आतंकवादियों की हिंसा ने अनेक परिवारों से उनका सम्मान और सुरक्षा छीन ली है और भारत अब कठोर प्रतिकार करेगा। अतः पहलगाम हमला और उसके बाद की कार्यवाई यह स्पष्ट करती है कि भारत अब आतंकवाद के प्रति केवल रक्षात्मक नहीं, बल्कि सक्रिय और निर्णायक रणनीति अपना रहा है, जिसमें सैन्य, कूटनीतिक और मनोवैज्ञानिक तीनों स्तरों पर जबाव दिया जा रहा है।

X. ऑपरेशन सिंदूरः चरण– I

ऑपरेशन सिंदूर का प्रथम चरण अत्यंत सुनियोजित और तकनीक आधारित खुफिया अभियान के रूप में प्रारंभ हुआ। इस चरण में रिसर्च एंड एनालिसिस विंग, भारतीय सेना तथा सिग्नल इंटेलिजेंस इकाइयों के बीच घनिष्ठ समन्वय स्थापित किया गया। आधुनिक तकनीकों जैसे सैटेलाइट इमेजरी, ड्रोन निगरानी और इलेक्ट्रॉनिक इंटरसेप्शन के माध्यम से भारत ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के कोटली और मुजफ्फराबाद क्षेत्रों में स्थित कुल उन्नीस सक्रिय आतंकी शिविरों तथा आठ सहायक प्रशिक्षण केंद्रों की सटीक पहचान और मैपिंग की।

हमले के तुरंन्त बाद विभिन्न खुफिया स्रोतों, विशेषकर पकड़े गए संदेशो से यह संकेत मिला कि इस हमले की साजिश पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के कोटली क्षेत्र में स्थित आतंकी ठिकानों से रची गई थी। उस समय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सऊदी अरब की अधिकारिक यात्रा पर थे, किन्तु स्थिति की गंभीरता को देखतें हुए उन्होंने अपनी यात्रा को बीच में ही समाप्त कर भारत लौटने का निर्णय लिया।

भारत लौटने के बाद प्रधानमंत्री ने कैबिनेट कमेंटी ऑन सिक्योरिटी की आपात बैठक की अध्यक्षता की और त्वरित रणनीतिक निर्णय लिए। अगले ही दिन बिहार में एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान उन्होंने स्पष्ट रूप से चेतावनी दी कि “जो लोग हमारे निर्दोष नागरिकों की हत्या करेंगे, उन्हे गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। यह बयान भारत के सख्त रूख को दर्शाता है।

इसके साथ ही लश्कर–ए–तैयबा के एन्क्रिप्टेड संचार को डिकोड किया गया, जिससे उनके आपूर्ति तंत्र, भर्ती नेटवर्क और संचालन तंत्र के महत्वपूर्ण पहलुओं का खुलासा हुआ। इस प्रकार कार्यवाई योग्य खुफिया जानकारी के आधार पर भारतीय सेना ने संयुक्त रूप से रात के 1:05 से 1:30 बजे के बीच 25 मिनट तक चली। सटीक हमलों की एक श्रृंखला को अंजाम दिया।

इन हमलों में विशेष रूप से आंतकी संगठनों के नेतृत्व ढ़ांचे, हथियार भंडार और लॉजिस्टिक केंद्रों को निशान बनाया गया। इस चरण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी सर्जिकल सटीकता थी, जिसके माध्यम से उच्च–मूल्य वाले लक्ष्यों को नष्ट करते हुए न्यूनतम क्षति सुनिश्चित की गई।

यह रणनीति भारत की पारंपरिक प्रतिक्रियात्मक और व्यापक प्रतिशोध आधारित नीति से एक महत्वपूर्ण बदलवा को दर्शाती है, जहाँ अब सीमित, लक्षित और प्रभावी कार्यवाई के माध्यम से आतंकवादी ढांचे को कमजोर करने पर जोर दिया जा रहा है।[11]

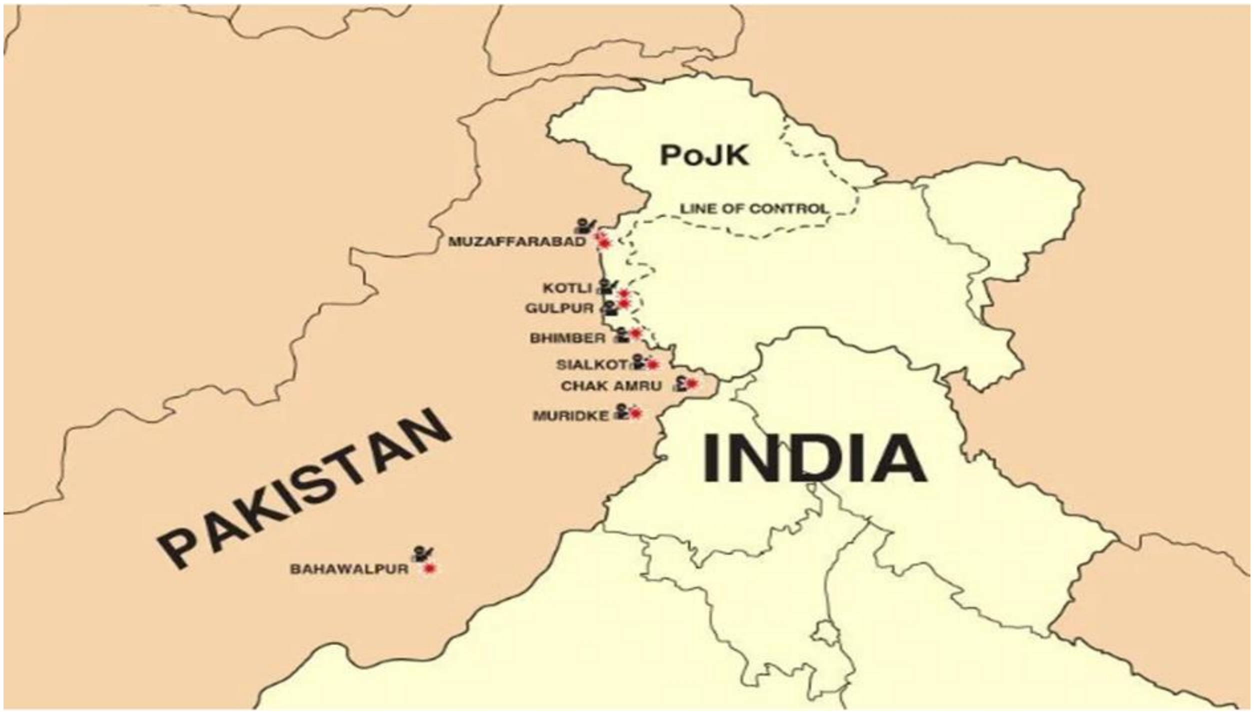

चित्र 1:पाकिस्तान और उसके क़ब्ज़े वाले कश्मीर में लक्षित जगहों को दिखाने वाले माननित्र[12]

XI. ऑपरेशन सिंदूरः : चरण–II और चरण–III

ऑपरेशन सिंदूर के दूसरे चरण में भारत ने आतंकवाद की केवल भौतिक संरचना ही नहीं, बल्कि उसकी वैचारिक और प्रचार तंत्र को भी निशाना बनाया। इस चरण का मुख्य उद्देश्य आतंकवादी संगठनों के उस नटवर्क को कमजोर करना था, जो ऑनलाइन माध्यमों से कट्टरपंथ, दुष्प्रचार और हिंसा को बढ़ावा देता है।

विदेश मंत्रालय और सूचना युद्ध विभाग ने वैश्विक डिजिटल प्लेटफार्मों के साथ मिलकर सैकडों ऑनलाइन प्रचार चैनलों और नेटवर्क को निष्क्रिय किया। इन प्लेटफार्मों का उपयोग आतंकवादी संगठनों द्वारा भर्ती, उकसावे और गलत सूचना फैलाने के लिए किया जाता था। इस प्रकार, भारत ने आतंकवाद के वैचारिक आधार पर भी प्रभावी प्रहार किया।

इसी के समानांतर, भारत ने एक सशक्त कूटनीतिक अभियान भी चलाया। सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल जिसका नेतृत्व शशि थरूर ने किया, अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद को केवल एक सुरक्षा समस्या नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और नैतिक चुनौती के रूप में प्रस्तुत किया। ''सिदूर का बदला खून'' जैसे प्रतीकात्मक संदेश के माध्यम से भारत ने वैश्विक समुदाय का ध्यान आकर्षित किया और आतंकवाद के मानवीय प्रभाव को उजागर किया।

तीसरे चरण में भारत ने सामरिक स्तर पर अपनी स्थिति को और मजबूत किया। नियंत्रण रेखा पर एकीकृत युद्ध समूहों की तैनाती कर किसी भी संभावित जवाबी घुसपैठ को विफल करने की तैयारी की गई। इससे सीमा पर त्वरित और प्रभावी सैन्य प्रतिक्रिया सुनिश्चित हुई।

इस अभियान की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि इसमें भारतीय सशस्त्र बलों को किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई, जो भारत की उन्नत खुफिया क्षमता, तकनीकी श्रेष्ठता और संचालनात्मक दक्षता को दर्शाता है।[13]

विदेश मंत्री ने अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर यह स्पष्ट किया कि भारत की कार्यवाई आत्मरक्षा के सिद्धान्त के अंतर्गत थी और इसका उद्देश्य केवल आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाना था, न कि किसी देश के खिलाफ युद्ध छेड़ना। कई देशों ने आतंकवाद के खिलाफ भारत के रूख का समर्थन किया, जबकि कुछ ने क्षेत्र में शांति और संयम बनाए रखने की अपील की। वैश्विक स्तर पर यह माना गया कि आतंकवाद के खिलाफ कार्यवाई आवश्यक है, लेकिन क्षेत्रीय स्थिरता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।[14]

तालिका 1 : ऑपरेशन सिंदूर द्वारा पाकिस्तान और पीओजेके में खत्म किए गए आतंकवादी ढांचे की सूची[15]

क्र. सं.	स्थान / कैम्प	क्षेत्र / देश	दूरी	आतंकवादी संगठन / नेतृत्व	प्रमुख कार्य / गतिविधि
1	सरजाल / तेहरा कलाएं	नरोवाल जिला (पजांब, पाकिस्तान) के शकरगढ़ तहसील में स्थित	8 km	जैश–ए–मोहम्मद, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से संचालित, मोहम्मद अदनान अली और काशिफ जान वरिष्ठ नेता यहाँ आते है।	इस जगह का इस्तेमाल सुरंग निमार्ण, ड्रोन संचालन, हथियारों और नशीले पदार्थों की तस्करी के लिए किया जाता है।
	बरनाल कैंप	भीमबर (पीओजेके)	10 km	लश्कर सेंटर इसमें 100 से 150 आतंकी रहते हैं।	इसका उपयोग पुंछ, राजौरी और रियासी क्षेत्र में आतंकियों और हथियारों की

2				कासिम गुज्जर, कासिम खंडी और अनस जरार आतंकी गुट कार्य करते हैं।	घुसपैठ के लिए किया जाता है।
3	महमूना जोया सेंटर	सियालकोट (पाकिस्तान)	15 km	हिजबुल मुजाहिदीन सेंटर की कमान मोहम्मद इरफान खान के पास है। यहाँ लगभग 20–25 आतंकी मौजूद हैं।	इस केन्द्र में आतंकियों को हथियार चलाने और रणनीति बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है।
4	मरकज़ अब्बास	कोटली (पीओजेके)	15 km	जैश–ए–मोहम्मद, संचालन हाफिज अब्दुल शकूर। यहाँ लगभग 100 से 125 आतंकी रहते हैं।	पूंछ–राजौरी सेक्टर में घुसपैठ करने और योजना बनाने के लिए कार्य करता हैं।
5	मरकज़ तैयबा	मुरिदके (पाकिस्तान)	30 km	लश्कर–ए–तैयबा, यहाँ प्रतिवर्ष लगभग 1000 लोगों की भर्ती की जाती है। अजमल कसाब भी यहीं से संबंधित था।	यहाँ हथियार और कट्टर बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ 26/11 के मुबंई हमलावरों को प्रशिक्षित किया गया था।
6	मरकज़ सयदना बिलाल	मुजफ्फराबाद (पीओजेके)	30 km	जैश–ए–मोहम्मद, मुफ्ती असगर खान कश्मीरी इसका नेतृत्व करता है। इसमें लगभग 50–100 आतंकी रहते हैं।	जम्मू कश्मीर में घुसपैठ से पहले आतंकियों को रखा जाता है। पाकिस्तानी सेना के एसएसजी कमांडो इस सेंटर पर प्रशिक्षण देतें है।
7	शवाई नाला कैंप	मुजफ्फराबाद (पीओजेके)	30 km	लश्कर कैंप, 200 से 250 आतंकी रहते हैं।	सोनमर्ग (अक्टूबर 2024), गुलमर्ग (अक्टूबर 2024) और पहलगाम (अप्रैल 2025) हमलों में शामिल, आतंकियों ने यहाँ प्रशिक्षण लिया था।
8	गुलपुर कैंप	कोटली (पीओजेके)	35 km	लश्कर	पुंछ (अप्रैल 2023) और हिन्दू तीर्थ यात्रियों के बस पर जून 2024 में हुए हमलों में शामिल, आतंकियों ने यहाँ प्रशिक्षण लिया था।
9	मजिस्द/मरकज़ सुभान अल्लाह	बहावलपुर (पाकिस्तान)	100 km	जैश–ए–मोहम्मद का मुख्यालय	भर्ती, प्रशिक्षण, कट्टर बनाने का केन्द्र, 14 फरवरी 2019 के पुलवामा हमले सहित कई आतंकी वारदातों में इसकी सक्रिय भूमिका थी।

XI. ऑपरेशन सिंदूर और संयुक्त सैन्य सिद्धान्त

ऑपरेशन सिंदूर की एक प्रमुख विशेषता इसका संयुक्त सैन्य स्वरूप था। भारतीय थल सेना, वायु सेना और नौसेना के बीच समन्वय ने भारत की बदलती सैन्य संस्कृति को दर्शाया, जहाँ अलग–अलग सेवाओं के बजाय एकीकृत युद्ध अवधारणा को प्राथमिकता दी है। संयुक्तता का यह मॉडल भारत की हिंद–प्रशांत रणनीति से सीधा जुड़ा हुआ है, क्योंकि इस क्षेत्र में संभावित संघर्ष बहु–क्षेत्रीय हो सकते हैं जिनमें भूमि, समुद्र, वायु, साइबर और अंतरिक्ष सभी शामिल हो। ऑपरेशन सिंदूर ने यह प्रमाणित किया कि इस प्रकार की जटिल सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए संस्थागत रूप से तैयार हो रहा है।[16]

XII. ऑपरेशन में प्रयुक्त प्रमुख रक्षा प्रौद्योगिकी

ऑपरेशन सिंदूर केवल एक सैन्य अभियान नहीं था, बल्कि यह भारत की तीव्र तकनीकी प्रगति और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का भी एक महत्वपूर्ण प्रदर्शन था। इस अभियान के माध्यम से भारत ने यह दिखाया कि वह आधुनिक युद्ध के बदलते स्वरूप के अनुरूप उन्नत तकनीकों का प्रभावी उपयोग करने में सक्षम है।

इस अभियान में अत्याधुनिक हथियार प्रणालियाँ, उन्नत निगरानी तंत्र और सुरक्षित संचार नेटवर्क का व्यापक उपयोग किया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि भारत रक्षा विनिर्माण और तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

1.उन्नत लड़ाकू विमानः ऑपरेशन के दौरान स्वदेशी विकसित तेजस जैसे लड़ाकू विमानों की क्षमताओं का परीक्षण किया गया। इन विमानों ने जटिल युद्ध परिस्थितियों में सटीकता, गति और समन्वय का प्रदर्शन किया।

2.मानव रहित हवाई वाहनः ड्रोन तकनीक का उपयोग निगरानी, टोही और लक्ष्य निर्धारण के लिए किया गया। इससे रियल टाइम खुफिया जानकारी प्राप्त करना संभव हुआ।

3.बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा प्रणालीः भारत की बहु–स्तरीय रक्षा प्रणाली की क्षमता को प्रदर्शित किया गया, जिसमे बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने की क्षमता का सफल परीक्षण शामिल था।

4.नौसेना प्लेटफॉर्मः भारतीय नौसेना के स्वदेशी युद्धपोत, जैसे विध्वंसक, फ्रिगेट और पनुडुब्बियों ने समुद्री सुरक्षा और शक्ति प्रदर्शन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5.साइबर युद्ध क्षमताएँः ऑपरेशन के दौरान साइबर सुरक्षा और संचार नेटवर्क की मजबूती का भी परीक्षण किया गया। नकली साइबर हमलों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया कि भारत का डिजिटल और रक्षा संचार तंत्र सुरक्षित और लचीला है।[17]

XIV. मीडिया कवरेजः ऑपरेशन सिंदूर पर वैश्विक दृष्टिकोण

भारतीय सेना की दो महिला अधिकारी थल सेना की कर्नल सोफिया कुरैशी तथा वायु सेना की विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने विदेश सचिव विक्रम मिस्री के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस में ''ऑपरेशन सिंदूर'' का पूरा ब्योरा साझा किया। [18]

ऑपरेशन सिंदूर को लेकर विश्व भर के मीडिया संस्थानों ने व्यापक रूप से सकारात्मक और विश्लेषणात्मक प्रतिक्रिया दी है। अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया ने इसे भारत की आतंकवाद–रोधी नीति में आए एक महत्वपूर्ण बदलाव के रूप में देखा है। प्रमुख अमेरिकी समाचार पत्र वॉल स्ट्रीट जर्नल ने अपनी रिर्पोट में कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ''कश्मीर में पर्यटकों पर हुए घातक आतंकी हमले का बदला लेने के लिए किया गया'', जिससे परमाणु हथियारों से लैस भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया है। इस टिप्पणी से स्पष्ट होता है कि वैश्विक समुदाय इस कार्यवाई को एक गंभीर लेकिन संदर्भित प्रतिक्रिया के रूप में देख रहा है।

बीबीसी ने भारतीय रक्षा मंत्रालय के हवाले से लिखा कि यह ऑपरेशन 22 अप्रैल के हमले के दोषियों को ''जवाबदेह ठहराने की प्रतिबद्धता'' का हिस्सा था, जिसमें 25 भारतीय और एक नेपाली नागरिक की मृत्यु हुई थी। साथ ही बीबीसी ने यह भी उल्लेख किया कि पहलगाम हमला पिछले दो दशकों में नागरिकों पर किया गया सबसे घातक हमला था, जिसने भारत में व्यापक जनाक्रोश को जन्म दिया।

फ्रांस के प्रतिष्ठित समाचार पत्र ले मोंडे ने 7 मई को किए गए इस ऑपरेशन की तुलना उरी (2016) और पुलवामा (2019) हमलों के बाद भारत द्वारा की गई कार्यवाइयों से की। अखवार के अनुसार, इस बार की प्रतिक्रिया ''अधिक तेज, सटीक और आक्रामक'' थी, जो भारत की बदलती रणनीतिक सोच को दर्शाती है। साथ ही, इसने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के उस बयान का उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने इस कार्यवाई को ''बेवजह हमला'' बताया, किन्तु रिर्पोट में यह भी संकेत दिया गया कि पाकिस्तान की आंतरिक स्थिति प्रभावी प्रतिक्रिया देने में बाधक हो सकती है।

रूस की समाचार एजेंसी तास (TASS) ने अपनी रिपोर्टिंग में भारत के आधिकारिक दृष्टिकोण को प्रमुखता दी और यह रेखांकित किया कि इस कार्यवाई का मुख्य उद्देश्य ''सीमा पार से संचालित आतंकी योजनाओं की जड़ों को निशाना बनाना'' था।[19]

XV. प्रभाव

ऑपरेशन सिंदूर 7 मई, 2025 में भारत द्वारा संचालित एक संयुक्त सैन्य अभियान था, जिसका उद्देश्य सीमा पार आतंकवादी ढाँचों को निष्क्रिय करना और रणनीतिक प्रतिरोध स्थापित करना था। इस ऑपरेशन में थल और वायु कार्यवाई के साथ–साथ भारतीय नौसेना की अरब सागर में सक्रिय तैनाती ने विशेष महत्व प्राप्त किया।

XVI. क्षेत्रीय प्रभाव

पाकिस्तान पर प्रभावः ऑपरेशन सिंदूर ने भारत–पाकिस्तान रणनीतिक संतुलन को प्रभावित किया। समुद्री दबाव और निर्णायक सैन्य कार्यवाई ने पाकिस्तान के लिए रणनीतिक विकल्पों को सीमित कर दिया। इससे भारत की रणनीतिक प्रतिरोध में वृद्धि हुई।

दक्षिण एशिया में संदेशः दक्षिण एशिया के अन्य देशों के लिए यह संकेत था कि भारत क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए सशक्त और उत्तरदायी भूमिका निभाने को तैयार है। यह भारत की ''नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर'' की छवि को मजबूत करता है।[20]

वैश्विक प्रभावः वैश्विक स्तर पर ऑपरेशन सिंदूर को भारत की बढ़ती रणनीतिक आत्मनिर्भरता और निर्णय क्षमता के रूप में देखा गया। हिंद–प्रशांत में सक्रिय महाशक्तियों, विशेषकर चीन और अमेरिका ने इस घटना को सावधानीपूर्वक देखा। चीन के संदर्भ में, यह ऑपरेशन भारत की उस क्षमता को दर्शाता है जिसके माध्यम से वह अपने समुद्री हितों की रक्षा कर सकता है। वहीं पश्चिमी देशों के लिए यह भारत की "Rules-Based Order" के प्रति प्रतिबद्धता और आतंकवाद–विरोधी रूख का संकेत था। भारत ने अपने प्रमुख वैश्विक साझेदारों जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और रूस को समय–समय पर अपने सैन्य अभियानों और उससे जुड़े घटनाक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। यह कदम केवल सूचना साझा करने तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना भी था कि भारत की कार्यवाई को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सही संदर्भ में समझा जाए और किसी प्रकार की गलतफहमी उत्पन्न न हो।

वाशिंगटन स्थित भारतीय दूतावास द्वारा जारी आधिकारिक बयान में यह स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया, भारत की कार्यवाई पूरी तरह लक्ष्य–केन्द्रित, सटीक और संतुलित थी। इस बयान में यह भी जोर दिया गया कि भारत ने किसी भी प्रकार के पाकिस्तानी नागरिक, आर्थिक या सैन्य ठिकानों को निशाना नहीं बनाया, बल्कि केवल उन आतंकी शिविरों पर कार्यवाई की गई, जिनकी पहचान और पुष्टि विश्वसनीय खुफिया जानकारी के आधार पर की गई थी। विदेश मंत्रालय द्वारा भी इस रूख को दोहराया गया, जिससे भारत की नीति में एकरूपता और स्पष्टता दिखाई दी।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने इस दौरान अमेरिकी नेतृत्व से भी उच्चस्तरीय संपर्क बनाए रखा। उन्होंने कार्यवाहक अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और विदेश मंत्री मार्को रूबियो से बातचीत कर भारत की कार्यवाई के उद्देश्यों और सीमाओं को स्पष्ट किया। इस संवाद के माध्यम से भारत ने अपनी ''लक्ष्मण रेखा'' भी स्पष्ट कर दी। भारत का उद्देश्य संघर्ष को बढ़ाना नहीं है, लेकिन यदि उसकी संप्रभुता और सुरक्षा को चुनौती दी जाती है, तो वह दृढ़ और निर्णायक प्रतिक्रिया देने के लिए पूर्णतः तैयार है।

इस पूरे घटनाक्रम ने यह दर्शाया कि भारत अब केवल क्षेत्रीय सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैश्विक कूटनीति में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। उसने यह साबित किया कि आतंकवाद के खिलाफ कार्यवाई करते हुए भी अन्तर्राष्ट्रीय नियमों, संतुलन और जिम्मेदारी का पालन किया जा सकता है।[21]

XVII. कानूनी और नैतिक आयाम

किसी भी सीमापार सैन्य कार्यवाई की वैधता अन्तर्राष्ट्रीय कानून के संदर्भ में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है। ऑपरेशन सिंदूर को भारत ने आत्म–रक्षा के अधिकार और आतंकवाद–निरोध के तर्क पर आधारित बताया। हालाँकि, नैतिक दृष्टि से यह आवश्यक है किः

- नागरिक हानि न्यूनतम हो,
- सैन्य कार्यवाई अनुपातिक हो,
- अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानूनों का पालन किया जाए।

भारत की रणनीति स्वयं को एक जिम्मेदार शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है, अतः ऐसे अभियानों में नैतिक और कानूनी संतुलन बनाए रखना अनिवार्य है।[22]

XVIII. निष्कर्ष

ऑपरेशन सिंदूर ने यह सिद्ध किया कि भारत अब केवल नीतिगत घोषणाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि अपनी समुद्री और सैन्य क्षमताओं के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता और राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने की क्षमता रखता है। पहलगाम हमले के प्रति भारत की प्रतिक्रिया पूरी तरह से कानूनी और नैतिक आधारों पर टिकी हुई थी। इतिहास इसे एक संतुलित सिद्धातों पर आधारित और सोच–समझकर की गई कार्यवाई के रूप में याद करेगा, जिसमें नेतृत्व, नैतिकता और रणनीतिक सटीकता का स्पष्ट समन्वय दिखाई देता है।

ऑपरेशन सिंदूर ने दक्षिण एशिया के भू–राजनीतिक और रणनीतिक परिदृश्य को एक नए रूप में प्रस्तुत किया है। यह केवल एक सैन्य अभियान नहीं था, बल्कि भारत की संप्रभुता, दृढ़ संकल्प और वैश्विक प्रतिष्ठा का बहुआयामी प्रदर्शन भी था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व मे भारत ने एक नई रणनीतिक सोच को सामने रखा जहाँ संयम और शक्ति का संतुलन तथा सटीकता और उद्देश्य का मेल दिखाई देता है। भूमि, समुद्र और वायु क्षेत्रों में शक्ति–प्रदर्शन की भारत की क्षमता अब केवल सैद्धांतिक अवधारणा तक सीमिति नहीं रह गई है, बल्कि यह एक संरचित, समन्वित और गहराई से एकीकृत वास्तविकता का रूप ले चुकी है। इंडियन आर्म्ड फोर्सेस की त्रि–सेवा संरचना (थल सेना, नौसेना और वायु सेना) अब अलग–अलग इकाइयों के रूप में नहीं, बल्कि एक संयुक्त और समेकित शक्ति के रूप में कार्य कर रही है। यह परिवर्तन भारत की सैन्य सोच में एक महत्वपूर्ण संस्थागत और वैचारिक विकास को रेखांकित करता है। ऑपरेशन सिंदूर के वैश्विक आयाम ने भारत की एक ऐसी छवि प्रस्तुत की है, जहाँ वह एक ‘‘जिम्मेदार शक्ति’’ के रूप में उभर रहा है, जो न केवल अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि वैश्विक शांति, स्थिरता और नियम–आधारित व्यवस्था को भी महत्व देता है। स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकी के विकास और उपयोग ने भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूत आधार प्रदान किया है, जो भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों से निपटने में अत्यंत महत्वपूर्ण होगा इस पूरे घटनाक्रम ने यह दर्शाया कि भारत अब केवल क्षेत्रीय सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैश्विक कूटनीति में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। उसने यह साबित किया कि आतंकवाद के खिलाफ कार्यवाई करते हुए भी अन्तर्राष्ट्रीय नियमों, संतुलन और जिम्मेदारी का पालन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. सिन्हा, डॉ. अजय कुमार, (2012), 'राष्ट्रीय सुरक्षा की परम्परागत एवं अपरम्परागत समस्याएं', नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स, पृ. 162-163

2. Regional Overview, South Asia Cooperative Environment Programme. https://www.sacep.org/regional-overview

3. कुमारी, डॉ करूणा, (2024), 'भारत की दक्षिण एशिया नीति', International Jouranl of Humanities and Social Science Research, Vol. 10, issue 2, pp. 35-39 https://www socialsciencejournal.in/assets/archives/2024/vol10issue2/10021.pdf

4. सिन्हा, डॉ. अजय कुमार, (2012), 'राष्ट्रीय सुरक्षा की परम्परागत एवं अपरम्परागत समस्याएं', नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स, पृ. 164

5. विजय, डॉ. संगीता और दीपिका शर्मा, (2019), '21 वी सदी में दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस); समस्याएं एवं संभावनाएं', International Journal of Research in Social Sciences Vol. 9, Issue 3. https://www.ijmra.us/project%20doc/2019/IJRSS_MARCH2019/IJRSSMarch19DeepikaRt.pdf

6. Das, P.K, (2028), 'Cross Border Terrorism in South Asia', Sumit Enterprises, Delhi, p. 224

7. Nat Strat, (26 May 2025), Compilapion of Pakistan Terrorist Attacks in India: 1989-2025, Part II https://www.natstrat.org/articledetail/publications/prat-ii-a-compilation-of-pakistani-terrorist-attacks-in-india-202.html

8. दैनिक जागरण, (8 मई, 2025)

9. Operation Sindoor: India's Military Might & Tech Prowess on Display, DIM Publications. https://www.datainsightsmarket.com/news/article/Operation-sindoor-indias-military-might-tech-prowess-on-display-31596

10. पाटिल, समीर और राहुल रावत, (13 मई 2025), 'ऑपरेशन सिंदूरः संदर्भ और परिणाम को समझने की कोशिश', आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/operation-sindoor-understanding-context-and-consequences.

11. Symposiom Society, (22 September, 2025), Hindu College, Terror, Tractics and Triumph: India's Counter Terror Doctrine.

https://www.hinducollegegazette.com/post/terror-tactics-triumph-india-s-counter-terror-doctrine-2025

12. पाटिल, समीर और राहुल रावत, (13 मई 2025), 'ऑपरेशन सिंदूरः संदर्भ और परिणाम को समझने की कोशिश', आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/operation-sindoor-understanding-context-and-consequences.

13. Symposiom Society, (22 September, 2025), Hindu College, Terror, Tractics and Triumph: India's Counter Terror Doctrine. https://www.hinducollegegazette.com/post/terror-tactics-triumph-india-s-counter-terror-doctrine-2025

14. पाटिल, समीर और राहुल रावत, (13 मई 2025), 'ऑपरेशन सिंदूरः संदर्भ और परिणाम को समझने की कोशिश', आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/operation-sindoor-understanding-context-and-consequences.

15. दैनिक जागरण, (8 मई, 2025), पृ. .2

16. भारत सरकार, (2025), 'आतंकवाद–रोधी तथा क्षेत्रीय सुरक्षा' अभियानों पर अधिकारिक ब्रीफिंग। रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

17. Operation Sindoor: India's Military Might & Tech Prowess on Display, DIM Publications. https://www.datainsightsmarket.com/news/article/operation-sindoor-indias-military-might-tech-prowess-on-display-31596

18. दैनिक जागरण, (8 मई 2025), पृ. 1

19. पाटिल, समीर और राहुल रावत, (13 मई 2025), 'ऑपरेशन सिंदूरः संदर्भ और परिणाम को समझने की कोशिश', आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/operation-sindoor-understanding-context-and-consequences.

20. भारतीय नौसेना, (2025), 'समुद्री क्षेत्रीय जागरूकता और क्षेत्रीय सुरक्षा', नौसैनिक रणनीतिक प्रकाशन

21. पाटिल, समीर और राहुल रावत, (13 मई 2025) 'ऑपरेशन सिंदूरः संदर्भ और परिणाम को समझने की कोशिश', आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/operation-sindoor-understanding-context-and-consequences.

22. संयुक्त राष्ट्र, (1982), 'समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय'